

Newspaper Clips

April 23-25, 2016

April 25

Financial Express ND 25.04.2016 P-12

Ericsson Innovation Awards go to BITS Pilani, IIT Bombay and IIT Varanasi

Ericsson, in association with the Foundation for Innovation and Technology Transfer (FITT), announced the winners of the 2nd edition of 'Ericsson Innovation Awards India' at IIT Delhi last week. FITT is an industry interface organisation of IIT Delhi. The awards were presented by Paolo Colella, head of Region India, Ericsson. The three winning teams, from BITS Pilani, IIT Bombay and IIT Varanasi, will be supported by Ericsson India financially to the extent of Rs 13 lakh each towards incubating the winning projects at any IIT-approved technology business incubators. Colella said Ericsson has been at the forefront of innovation in its history of 140 years, and by inculcating the spirit of innovation amongst the student community of India, it wishes to identify innovators of tomorrow and help them shape the solutions that will define the networked society. Ericsson Innovation Awards India were initiated in 2014 to promote the spirit of innovation among students at select IITs. In its second year, the awards have been rolled out to IITs across Delhi, Kanpur, Kharagpur, Mumbai, Roorkee, Guwahati, Bhubaneswar, Mandi and Hyderabad, as well as IISc Bangalore, BITS Pilani, IIIT Gwalior, IIIT Delhi and Banaras Hindu University (BHU) in Varanasi.

**Deccan Herald ND
25/04/2016 P-05**

IIT Jodhpur to educate engineers on quake-resistant construction

JODHPUR, PTI: As a part of efforts to evolve a regulatory framework for earthquake resistant construction, IIT Jodhpur has decided to educate and update engineers, specially, from local bodies through a programme on seismic behaviour of buildings.

The two-day-long programme, launched on Sunday, will focus on the dynamics of the buildings in order to understand their behavioural patterns during an earthquake.

Director of the IIT Jodhpur, CVR Murty, said the programme would lay emphasis on what actually happens during an earthquake and how the architectural choices affect the seismic behaviour of a structure.

Enhancing the technical skill of engineers, Murty said, this program will help in understanding the latest technology that could be adopted for earthquake-resistant construction.

He also added that the disasters could be prevented or at least minimised only by taking adequate measures right from planning to construction of a building.

“There is very little knowledge or expertise about anti-seismic technology in construction in the country and with a view to address this, we have come up with this programme with an objective to help engineers with required knowledge about seismic behaviour of the buildings,” Murty said.

दक्षिणी दिल्ली में वाहनों की रफ्तार बढ़ी, जाम कम

नई दिल्ली | वरिष्ठ संवाददाता

आईआईटी दिल्ली के नए अध्ययन के अनुसार सम-विषम के पहले चरण 1 से 15 जनवरी के पीक ऑवर्स में वाहनों की औसत गति घटी थी। यह अध्ययन चार तरह के मार्गों आर्टिवल, कॉमर्शियल, रिंग रोड और इंटर सिटी रोड पर किया गया है।

दक्षिणी दिल्ली में देखने में आया कि कारों की गति बढ़ रही है और जाम कम हो रहा है। अध्ययन में गूगल मैप के डिस्टेंस मैट्रिक्स एपीआई द्वारा 14 मुख्य मार्गों में यातायात गति के आंकड़े

जुटाए गए। इनमें अरविंदो मार्ग और अगस्त क्रांतिमार्ग सहित दिल्ली से गाजियाबाद और मुड़गांव को जोड़ने वाले छह इंटरसिटी रोड भी शामिल थे। साथ ही 8 कमर्शियल रोड को लिया गया, जो कर्नॉट प्लेस और अशोका रोड को जोड़ते हैं।

आठ आउटर रिंग रोड और रिंग रोड जो नेहरू प्लेस, एम्स और आईआईटी गेट के पास वाली सड़कें भी शोध में शामिल हुईं। आईआईटी दिल्ली से जुड़े प्रो. डॉ. दिनेश मोहन ट्रिप(ट्रांसपोर्टेशन रिसर्च फंड जंजरी प्रिवेंशन) पर शोध कर रहे हैं।



● फाइल फोटो

किंग सड़कों पर अध्ययन

- नोएडा, गाजियाबाद और मुड़गांव को जोड़ने वाली छह सड़कों पर
- अरविंदो मार्ग ● अगस्त क्रांति मार्ग
- एम्स ● आईआईटी गेट ● रिंग रोड के आठ क्षेत्र

करीब 5 फीसदी गति बढ़ी

आईआईटी के वैज्ञानिकों के अनुसार नंबर नियम के दौरान अधिकतम 9 और औसतन 5 फीसदी गति बढ़ी। दक्षिणी दिल्ली में वाहनों की गति बढ़ी और जाम में कमी दर्ज हुई।

दूसरे चरण में कारों की संख्या में इजाफा

योजना एवं वास्तुकार विद्यालय (एसपीए) का शोध 18 अप्रैल को दिल्ली के 8 स्थानों पर किया गया। शोध टीम के प्रमुख प्रोफेसर डॉ. सेवा राम ने बताया कि शोध के मुताबिक सम-विषम के पहले चरण के मुकाबले दूसरे चरण में सड़कों पर निजी कारों की संख्या अधिक है।

रिंग रोड पर दोपहिया वाहन 25-45% बढ़े

- रिंग रोड पर दोपहिया वाहन 25 से 45 फीसदी तक बढ़े
- सभी स्थानों (मुड़गांव एक्सप्रेस वे को छोड़कर) पर बसों की संख्या में भी वृद्धि दर्ज की गई है, जो बेहतर है।
- सर्वे में 69 फीसदी कार मालिकों ने सम-विषम को बेहतर बताया, जबकि सिर्फ 14 प्रतिशत ने इसके खिलाफ राय दी।

IITK to get second SIDBI centre under startup India programme

<http://paper.hindustantimes.com/epaper/viewer.aspx>

KANPUR: Under the 'StartUp' India programme, the Indian Institute of Technology (IITK) would soon have second centre of SIDBI Innovation and Incubation. IITK research and development dean Dr Amlendu Chandra said that the government has allocated Rs70 crore for the set up of centre and science and technology park at the premises. He said that the institute has prepared the outlines of the two projects and would soon start working on them. The two centers would assist students or any other entrepreneur who preferred working on any viable innovative idea. At present, many students have taken assistance from existing SIDBI centre and set up IT industries. Dr Chandra further said that the institute would also submit a detailed project to set up a railway research centre. The government has also given its nod for this project.

April 24

Times Of India ND 24/04/2016

P-6

Drones grab eyeballs at IIT Open Day

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: From useful innovations to hi-tech products, the Open Day of the Indian Institute of Technology, Delhi, on Saturday showcased a wide range of products developed by students and teachers.

Some 4,000 schoolchildren who flocked the IIT-D campus were simply in awe of the drones with vertical takeoff and landing technology. Students from the department of Physics, IIT-D, demonstrated the functional models of a variety of unmanned aerial vehicles with the capability to detect numberplates of cars and manage crowd flow.

Another big crowdpuller was the "underwater glider"—an autonomous vehicle that uses a variation in buoyancy along with wings to propel in water—which could be useful for surveillance.

Several IIT-based innovators are tying up with e-commerce companies to sell their products. One such innovation is Troguard, a hip-protection device.



FLYING START: Several innovators are tying up with e-commerce companies to sell their products

Hindustan ND 24/04/2016

P-5

हेलमेट में प्यूरिफायर लगवा प्रदूषण से बचें

तकनीक

आईआईटी दिल्ली में शनिवार को ओपन हाउस का आयोजन किया गया। इसमें आईआईटी के विद्यार्थियों ने अपने प्रोजेक्ट को आम लोगों के सामने पेश किया। इसमें भविष्य की तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान शहरों से लेकर गांव में रहने वालों के जीवन में सरल बनाने के लिए कई तरह के उत्पाद पेश किए। इसे देखने के लिए बड़ी संख्या में स्कूलों के विद्यार्थी भी पहुंचे थे। पेश है सुशील राघव और रोहित पंवार की रिपोर्ट...

चार विद्यार्थियों ने बनाया हेलमेट एयर प्यूरिफायर

एमटेक (एप्लाइड मैकेनिक्स) प्रथम वर्ष के चार विद्यार्थियों की टीम ने दिल्ली के प्रदूषण से दोपहिया वाहनों को बचाने के लिए एक हेलमेट एयर प्यूरिफायर विकसित किया है। टीम में शामिल दीपेश चौधरी ने बताया कि प्रदूषण का सबसे अधिक प्रभाव दोपहिया वाहन चालकों पर पड़ता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए हमने इस हेलमेट को बनाने के बारे में सोचा। उन्होंने बताया कि हमने इस हेलमेट में एन95 मार्स्क का उपयोग किया है।



300 रुपये खर्च करके आप भी अपने हेलमेट में प्यूरिफायर लगा सकते हैं।

सौर ऊर्जा से मच्छर को मराने वाला यंत्र

एमटेक (डिजाइन इंजीनियरिंग) में पढ़ने वाले सागर दास और अभिरूप सतीश ने मच्छर मारने का एक ऐसा यंत्र विकसित किया है जो सौर ऊर्जा से काम करता है। सागर ने बताया कि शाम को ज्यादा मच्छर बाहर आते हैं। यंत्र में चीनी और खमीर

रखकर कार्बन डाईऑक्साइड पैदा की जाती है, जिससे मच्छर उसकी ओर आकर्षित होते हैं और यंत्र में फंस जाते हैं। दिन में इसे सूरज की रोशनी में रखा जाता है और ग्रीन हाउस प्रभाव की वजह से यंत्र का तापमान काफी बढ़ जाता है।



पैडल और सौर ऊर्जा से चलने वाला पंप। •शेनुस्तार

खंभे पर चढ़कर बिजली ठीक करेगा इको रोबोट

आईआईटी दिल्ली के रोबोटिक्स क्लब ने हाइब्रिड और इको रोबोट तैयार किए हैं। क्लीन एनर्जी के लिए प्रोत्साहित करने के लिए इन्हें बनाया गया है लेकिन ये कई काम करते हैं।

किसी भी फैक्ट्री में चंद मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह सामान ले जाया जा सकता है। इस तकनीक से भारी सामान को भी ले जाया जा सकता है। यही नहीं, बिजली के पोल पर कुछ गड़बड़ी होने की स्थिति में हाइब्रिड रोबोट खुद से बिजली के उपकरण लगा ठीक कर सकता है।

800 फीट ऊंचाई पर 35 मिनट तक रहता है ड्रोन



इंजीनियरिंग फिजिक्स विभाग ने ऐसा ड्रोन तैयार किया है जो 800 फीट की ऊंचाई तक उड़ान भर सकता है। छात्रों का दावा है कि 4000 फीट तक इसे उड़ाया जा सकता है। खास किस्म के सेंसर लगे हैं जो कई एंगल से तस्वीरें लेने

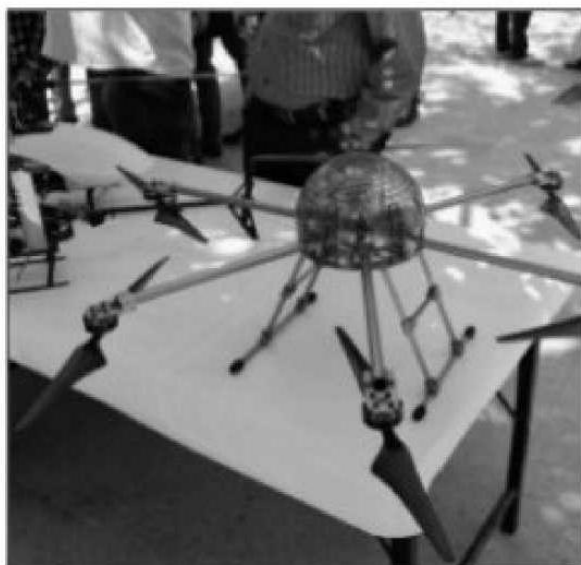
पैडल से चलने वाला पंप सुलझाएगा समस्या

खलब खलब से खेलों की सिंचाई करने के लिए किसानों को डीजल पंप का सहारा लेना पड़ता है जो उनके लिए काफी महंगा पड़ता है। एमटेक (डिजाइन इंजीनियरिंग) के दो विद्यार्थियों रोहित और पवन तिवारी ने किसानों की इस समस्या को हल करते हुए पैडल और सौर ऊर्जा से चलने वाला पंप तैयार किया है। पवन ने बताया कि यह पंप 30 फीट से पानी खींच सकता है। इससे एक घंटे में दो एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकती है। पवन के मुताबिक पैडल वाले यंत्र को बनाने में करीब 6,000 रुपये का खर्च आता है।

में सक्षम हैं। इसे बनाने वाले तन्मय कहते हैं कि आसमान से किसी भी सामान को स्केन करने की क्षमता भी रखता है। कुल 12 ड्रोन बनाए गए हैं। दिल्ली पुलिस की ओर से आईआईटी दिल्ली से ऐसे ड्रोन की मांग की है।

Statesman ND 24/04/2016 P-2

IIT Delhi researchers showcase innovations



abhinav singh

NEW DELHI, 23 APRIL: Life would have been entirely different for modern man had technical and scientific innovations not been made. Today's Open House exhibition at IIT Delhi, a hot-spot for showcasing innovations and experiments by future technocrats, is a great example of this truth.

Though many of the experiments are still in the pipeline with their feasibility yet to be tested under real conditions, the efforts put in by the students and faculty of IIT draws cheers from visiting school children. The enthusiasm of the school children boosted the morale of the researchers. "The enthusiasm of these school children and their admiration affirm our resolve towards our commitment and goal," said an applied mechanics student of IIT.

A unique range of products to make life more convenient for the visually impaired included a SmartCane which uses ultrasonic ranging to detect objects in the path of a blind person. "It can detect

above-knee and hanging obstacles within the range of 3 metres in front of a user," said a researcher.

The high quality yet affordable tactile diagrams aim at empowering the persons with visual impairment by providing access to figures and diagrams in a comprehensible form. "It uses 3-D printing for mould making and thermoforming for actual production of tactile diagram," said a researcher.

The commitment of technocrats towards environmental and species conservation is showcased by developing acoustic technology for conservation of dolphins. This will help in counting dolphins in the Ganga. The acoustic data recorded using stereo hydrophones will detect presence and number of dolphins in specific areas.

A modified helmet fitted with detachable air purifier filter to filter the air inhaled by bikers is a simple mechanism but is unique in itself. "These are odd-even days and everyone is aware and concerned about their health. This is a simple mechanism in which an air filter is fitted in the helmet using a spring," said the researcher.

Development of a bulletproof jacket with treated multilayered high performance fabric for bullet and stab resistance, a device for making tulsi mala beads, improved design to reduce drudgery in operation of the human operated treadle pump, design of naval vessels, exerciser cum purifier are among the innovations that were on display.

Seeing the drones developed by IIT students, a schoolboy visitor said, "This is what we see on Discovery channel. Apart from defence and security purposes I came to know that it can also be used in agriculture for planting seeds," said the boy. The researchers said they are working on a specific modification of drone to be used in planting seeds but the experiment is still in the initial stages.

आईआईटी ओपन हाऊस में समाज से जुड़े अविष्कार

नई दिल्ली, 23 अप्रैल (मनीष राणा): आईआईटी दिल्ली द्वारा शनिवार को अपने परिसर में ओपन हाऊस के 12वें संस्करण का संस्थान के निदेशक वी. रामगोपाल ने डोगरा हॉल में विधिवत शुभारंभ किया। इसके बाद प्रोफेसर जॉर्जी जोसेफ द्वारा श्री डी विजन और हॉलोग्राम पर आमंत्रित वार्ता हुई। इस दौरान छात्रों की परियोजनाओं की प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। आईआईटी द्वारा आयोजित इस ओपन हाऊस में चार हजार से अधिक स्कूली छात्रों ने हिस्सा लिया। 500 से अधिक शोध परियोजनाएं और 80 डेबो परियोजनाएं पेश की गईं। ओपन हाऊस में आईआईटी के निदेशक वी. रामगोपाल राव द्वारा इसके आयोजन से पहले कही गई बात कि हम ओपन हाऊस के माध्यम से समाज से और भी बेहतर तरीके से जुड़ने की कोशिश करेंगे चरितार्थ होती दिखाई दी। ओपन हाऊस में वह प्रोजेक्ट देखने को मिलेंगे जिनसे समाज को सीधा फायदा होगा, खासकर निम्न व पिछड़े वर्ग के लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने वाली कई कम कीमत की महत्वपूर्ण वस्तुएं देखने को मिलीं।

सौर ऊर्जा के इस्तेमाल से मंरेंगे मच्छर

आईआईटी दिल्ली से एमटेक (डिजाइन इंजीनियरिंग) के छात्र सागर दास और अभिरुप सतीश ने सौर ऊर्जा से काम करने वाला मच्छर मारने का यंत्र विकसित की है। सतीश का कहना है कि मच्छर शाम के समय अधिक संख्या में बाहर निकलते हैं। इस यंत्र में चीनी और खमीर रखकर कार्बन-डाईऑक्साइड पैदा की जाती है, जिससे मच्छर उसकी तरफ आकर्षित होते हैं और यंत्र में जाकर फंस जाते हैं। इसके बाद दिन में इस यंत्र को धूप में रख दिया जाता है जिससे प्रॉन हाऊस प्रभाव की वजह से यंत्र का तापमान काफी बढ़ जाता है और इसमें फंसे मच्छर मर जाते हैं।

कम लागत की कई वस्तुएं बदल सकती हैं पिछड़े इलाकों की तस्वीर



ओपन हॉउस में आकर मजा आ गया। रोबोटिक्स से लेकर फिजिक्स में देखने लायक बहुत कुछ था। यहां आकर कक्षाओं में पढ़ी हुई कई-थ्योरियों पर काम होते देखा। यह अनुभव जिंदगीभर याद रहेगा।

-राहुल आनंद, डीएबी जसोला



ओपन हॉउस का अनुभव अच्छा रहा। यहां हमने कई चीजें सीखीं। सबसे बड़ी बात हमें यहां आकर विषयों के कई विकल्प मिले। जिस कारण भविष्य में हम अपने इच्छा के अनुरूप आसानी से किसी विषय का चुनाव कर सकेंगे।

-अमन, राजकीय विद्यालय जैकब पूरा



आज तक जो थ्योरी में पढ़ा था, उसे प्रैक्टिल देख बहुत कुछ सीखने को मिला। मगर ऐसे ओपन हाऊस एक दिन में खत्म नहीं होने चाहिए, इसे कम से कम दो तीन दिन चलाया जाता। मैं ज्यादा चीजें देख नहीं पायी।

-इशा शर्मा, आर्यन स्कूल, गुडगांव



जो अभी तक केवल किताबों में पढ़ा था, उसका प्रैक्टिल देख अच्छा लगा। लैब काफी अच्छी है आईआईटी की, जिन्हें देख काफी कुछ सीखने को मिला। यहां आकर बहुत अच्छा लग रहा है।

-प्राची, आर्यन स्कूल, गुडगांव



आईआईटी ओपन हाऊस में विद्यार्थियों ने समाज की तस्वीर बदल सकने वाले आविष्कारों के लिए दीवार।

एक्सरसाइज कम वॉशिंग मशीन



ऐसी महिलाएं जो एक्सरसाइज नहीं कर पाती हैं या ऐसे लोग जो महंगी वॉशिंग मशीन नहीं खरीद सकते हैं, वे साइक्लिंग करते हुए घर के गंदे कपड़े धो सकते हैं। छात्रों द्वारा बनाई गई एक्सरसाइज कम वॉशिंग मशीन की खास बात यह है कि इसमें इस्तेमाल की गई साइकिल को अलग से हटाकर सामान्य साइकिल की तरह भी इस्तेमाल किया जा सकता है। आईआईटी दिल्ली के छात्र स्वदेश कुमार व पुष्पेंद्र आर्य द्वारा बनाई गई इस वॉशिंग मशीन में साइकिल को मैकेनिकल डिवाइस के माध्यम से इस तरह जोड़ा गया है कि पैडल मारने पर वॉशिंग मशीन में कपड़े घूमने लगते हैं।

रिमोट ऑपरेटिड अंडर वॉटर व्हीकल



भारतीय नेवी में लेफ्टिनेंट व वर्तमान में आईआईटी दिल्ली के शोधार्थी लेफ्टिनेंट पॉल ने समुद्र में खराब होने वाले जहाजों की जांच के लिए रिमोट ऑपरेटिड अंडर वॉटर व्हीकल तैयार किया है। लेफ्टिनेंट कमांडर इशाक भक्कर लेफ्टिनेंट के मैट्टर है, जो नेवी से ही है और वर्तमान में आईआईटी में बतौर प्रोफेसर रिसर्च कर रहे हैं। इस अंडर वॉटर व्हीकल की खास बात यह है कि यह पहला ऐसा व्हीकल है, जिसमें तीन पंखे लगाए गए हैं, जबकि अभी तक चार पंखे लगाने का चलन है।

साइक्लिक ट्रेडल पम्प

देश के वह भाग जहां तीस फुट पर ही भूगर्भ जल आ जाता है उन क्षेत्रों के छोटे किसान अब साइकिल के पैडल मारकर अपना खेत भर सकेंगे। इसके अलावा तालाबों, पोखरों या अन्य किसी स्थान से पानी को बाल्टी या अन्य किसी साधन से भरकर लाने के बजाय वहीं से सीधा पैडल मारकर अपने खेतों में फसल तक पानी पहुंचा सकेंगे। इसके लिए आईआईटी दिल्ली से एमटेक कर रहे छात्र पवन कुमार तिवारी और रोहित कुमार ने साइक्लिक ट्रेडल पम्प बनाया है। इस पम्प से साइकिल के पैडल के सहारे पानी खिंचा जा सकता है। पम्प में वॉल को चैन और गरारी से जोड़ा गया है। जिससे पैडल मारने पर चैन के घुमने से गरारी घुमती है और पम्प में पड़ा हुआ वॉल ऊपर नीचे होता है, जिससे उससे पानी खिंचकर आता है। इसके अलावा इसे दूसरे छोर से सोलर सिस्टम के माध्यम से भी चला सकते हैं, लेकिन तब इसकी कीमत बढ़ जाएगी। रोहित कुमार ने बताया कि बिना सोलर पैनल के इसकी कीमत लगभग सात हजार रुपए आ रही है। जबकि सोलर लगाने पर सोलर पैनल और मोटर का खर्चा बढ़ जाएगा। लेकिन यदि कोई सोलर माध्यम से इसे चलाता है, तो दूसरी तरफ की पैडल चैन प्री हो जाएगी और घुमेगी नहीं। पैडल मारकर पानी निकालने पर यह एक घंटे में 300 लीटर पानी निकालता है, सोलर से चलाने पर इसकी क्षमता बढ़ जाएगी। इसके अलावा तालाब व पोखरों से पानी खिंचने पर भी प्रति घंटा यह 300 लीटर से अधिक पानी देगा। रोहित ने कहा कि हमने यह पम्प छोटे किसानों को ध्यान में रखकर बनाया है, जो सब्सिडी आदि की खेती करते हैं और सिंचाई के लिए बाल्टी आदि से जमा किया हुआ पानी खेतों तक लेकर जाते हैं।

खेतों में बीज बोएगा ड्रोन

आईआईटी के छात्रों की पहल किसानों के चेहरों में चमक ला सकती है। आईआईटी दिल्ली के छात्रों ने एक ऐसा ड्रोन तैयार किया है। जिसका प्रयोग किसान खेतों में बीज बोने के लिए कर सकते हैं। ड्रोन तैयार करने वाले एक छात्र तन्मय ने बताया कि इस ड्रोन में हमने एके 47 बंदूक में प्रयोग में होने वाली तकनीक का प्रयोग किया है। एके 47 बंदूक में गैस होती है जिसे गोलियां चलती हैं। इस तकनीक का प्रयोग करके हम खेतों में बीज बो सकते हैं। इस प्रोजेक्ट को लेकर अभी भारत सरकार के कृषि मंत्रालय से बात चल रही है। इसकी कीमत फिलहाल 40 हजार रुपए हैं।

Engg courses galore, but India clueless on categories

AICTE TO CONSOLIDATE COURSE TAGS

A FEW OF 35 DIFFERENT NAMES FOR SAME COURSE (AN ILLUSTRATION)

> Electrical and computer engineering, electrical and electronics engineering, electrical and electronics engineering (sandwich), electrical and instrumentation engineering, electrical and mechanical engineering, electrical and power engineering, electrical engineering, electrical engineering (electronics and power), Electrical engineering industrial control, electrical electronics and power .



WHAT LED TO 'DUPLICATION' OF ENGINEERING COURSES

> Till 1980, India did not permit private colleges to offer engineering. When the sector was opened up, several experts felt that

core engineering subjects must remain in the domain of govt colleges. So, when private colleges sent their application for approval to

the govt, they came up with different names around core courses. Hence, the mad list of different nomenclatures for similar courses

SIMILAR PROBLEMS ELSEWHERE

> **US** | While computer science (CS) and IT are popular around the world, US academic institutions are divided over whether or not these majors should be affiliated with engineering schools. Although several US universities offer CS-related degrees through engineering schools, hundreds don't. At Duke University, for instance, the CS degree is offered through Trinity College (Arts & Sciences), rather than Pratt School of Engineering. These distinctions increase the difficulty in counting engineering graduates

> **China** | In China, Soviet development model led administrators to attach the term "engineering" to several institutions and programs that had science and technology related but not necessarily pure engineering content

(Source: Getting the Numbers Right: International Engineering Education in the United States, China, and India by Gary Gereffi and others)

Hemali Chhappia
@timesgroup.com

Mumbai: Are you an electrical engineer or a computer science graduate? If they are often asked this question by confused recruiters, the government is equally unclear about the number and kind of engineers that the nation produces.

In a young country where engineering is one of the most preferred professional careers, there is no clarity on the count of students who graduate in each discipline. How many mechanical or electrical engineers do we produce? No one knows.

It is the battery of engineering courses with outlandish labels that is to be blamed for the situation. India has 234 degree and 399 diploma courses in engineering. "All that is being consolidated now. Although it is taking

some time, we are working on streamlining the course tags," said AICTE chairman Anil Sahasrabudhe.

While the problem may seem elementary, this fundamental faux has left India with no statistical information on engineers in the country who have specialised in various disciplines.

The problem, as an AICTE official said on the condition of anonymity, also leads to several handicaps. "First, there is no historical data. Second, if this is not corrected now, it will be impossible to plan for the future in terms of schematic expansion or even if we need to cut down on growth."

For instance, he added, there is no central agency that maintains data on graduating engineers. And, there is no information on stream-wise breakup of engineers either.

Decades ago, an engineer-

ing education was the sole domain of the government. In 1980, when the sector opened up, experts felt that the core engineering sectors must be taught by state colleges only, said former All India Council for Technical Education (AICTE) chairman S S Mantha. "But students only queued up for core subjects. So private colleges would change the names of the course a bit and apply for government approval," added Mantha.

Getting an academic bona fide was simple. The central template of the course from a government college was picked. With a bit of tweaking and rewiring, a new programme was designed around it and renamed.

For instance, when the electronics boom started, different courses such as power electronics, electrical communication, electrical and electronics engineer-

ing and a whole range of programmes with varied names were offered. What's more, consolidating this list now isn't easy either. "For instance, is the electrical engineering and computer science more bent towards electronics or computer science?" asked Mantha.

Experts say the fact that there are 42 degree programmes in electrical engineering and electronics, all with "outlandish nomenclature", indicates these have been created for the convenience of private institutes. "A new college has to start with a minimum student intake of 300, distributed equally among five branches. Different nomenclatures benefit profit-minded institutes that want only popular disciplines," said a member of the committee which analysed vacancies in professional courses and suggested remedial measures to Maharashtra government.

Statesman ND 24/04/2016 P-5

HC quashes sacking of Sandeep Pandey from IIT-BHU

press trust of india

ALLAHABAD, 23 APRIL: The Allahabad High Court has struck down an order terminating the contract of Magsaysay awardee Sandeep Pandey as a visiting faculty member by IIT-Banaras Hindu University, holding that the ex-parte action on charges like anti-national activities which have "serious apersions" violated "the principle of natural justice".

A division bench comprising Justices V K Shukla and Mahesh Chandra Tripathi yesterday allowed the petition filed by Pandey, who had challenged the order dated 6 January, 2016 terminating his contract whereby he had been appointed visiting Professor in Department of Chemical Engineering and his tenure



Sandeep Pandey

was to end on 30 July, 2016.

In the order, Pandey was told that the decision to terminate his contract was taken at a meeting of the Board of Governors of IIT (BHU) which held him guilty of "cyber crime" and acting "against national interest". The Board had taken cognizance of letter from a political science student, who had charged Pandey with "involvement in political activities and being an active sympathizer of naxalites".

Rajasthan Patrika ND 24/04/2016 P-12

आईआईटी कानपुर में यौन उत्पीड़न, छात्र निष्कासित

कानपुर @ पत्रिका

mp.patrika.com

आईआईटी कानपुर से बैचलर ऑफ साइंस (बीएस) फिजिक्स, करने वाली भोपाल की 23 वर्षीय छात्रा ने पटना के रहने वाले अपने एक साल सीनियर छात्र पर पिछले दो साल से यौन उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। इस मामले की जांच प्रशासन ने वुमेन सेल (महिला प्रकोष्ठ) से करवाई और मामला सही पाया गया। इसके बाद छात्र को कॉलेज से टर्मिनेट (निष्कासित) कर दिया। छात्र ने इस संबंध में इलाहाबाद हाईकोर्ट में गुहार लगाई है। आईआईटी के एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (डिप्टी रजिस्ट्रार) ने बताया कि बीएस

फिजिक्स की तीसरे साल की छात्रा ने पांच जनवरी 2016 को संस्थान की वुमेन सेल को शिकायत की बीएस फिजिक्स के ही एक सीनियर छात्र ने पिछले दो वर्षों में कई बार उसका यौन उत्पीड़न किया।

दोनों छात्र और छात्रा आईआईटी के ही अलग-अलग हॉस्टल में रहते थे। छात्रा की इस शिकायत पर आईआईटी प्रशासन ने वुमेन सेल को मामले की जांच करने को कहा। वुमेन सेल की जांच में छात्रा के आरोप सही पाए गए। इस बारे में जब छात्र से सवाल किए गए तो उसने इस बाबत कोई भी ठीक जवाब नहीं दिया। इसके बाद वुमेन सेल ने इस मामले में अपनी रिपोर्ट आईआईटी प्रशासन को सौंपी।

JKCI and IIT-K conduct trial of new renal cancer drug

<http://timesofindia.indiatimes.com/city/kanpur/JKCI-and-IIT-K-conduct-trial-of-new-renal-cancer-drug/articleshow/51962341.cms>

Kanpur: Patients, suffering from renal cancer, the most dangerous cancer in which the patient has a very bleak chance of survival, have got some hope as JK Cancer Institute (JKCI) and IIT-Kanpur have taken up joint research to study the impact of the cancer drugs on cancer patients.

JK Cancer institute, a unit of Lala Lajpat Rai Hospital, and IIT-K are conducting trial of three medicines on three different types of cancers including renal cancer, head and neck cancer and metastatic colorectal cancer. These cancers, especially the renal cancer, is very common among the Indians which engulfs many lives every year.

The trial of these medicines is being conducted under the guidance of Prof SN Prasad and assistant professor Saraj Singh of JK Cancer institute. Anukriti Singh, a research scholar in bio-medicine from IIT-Kanpur, who is also associated with this trial, is helping the experts to prepare a final report of the trial of these medicines.

Cancer survivors felicitated: JK Cancer Institute felicitated 40 cancer patients, who have survived for more than five years without taking medicines after being treated in the institute, on the occasion of its 60th foundation day on Saturday. Foundation stone of the institute was laid by former President, Dr Rajendra Prasad in 1956.

The experts interacted with the patients. Dr Sunny Singh delivered a talk on cancer, how it is spread and what one can be done to avoid falling victim to the disease. Use of oral contraceptive pills increases the chance of ovarian cancer by 30%. As far as lung cancer is concerned, risk of getting it can be reduced upto 35% by just avoiding tobacco and its products.

IIT Varanasi students create 'helmet' to curb drunken driving

<http://timesofindia.indiatimes.com/tech/tech-news/IIT-Varanasi-students-create-helmet-to- curb-drunken-driving/articleshow/51955025.cms>



NEW DELHI: To make roads safer for motorcyclists, a team of five students from IIT Varanasi is working on a unique device. The team is developing a smart helmet connected with the motorbike that aims to prevent drunken driving.

The smart helmet makes it mandatory for the motorist to wear the helmet and have a permissible alcohol breath level to start the motorbike.

The IIT Varanasi team lead by Naman Singhal and comprising Shubham Jaiswal, Rishabh Babeley, Devendra Gupta and Jagjeet Shyamkunwar.

"The uniqueness of the solution being that a particular two-wheeler can only be switched on with a particular helmet and without which the two-wheeler cannot be started thus making it safe from theft also," explained a team member.

In case of an accident the helmet sends the location of the victim to the ambulance and family members. This is enabled through a cloud server which will process the data and provide immediate medical help to the victim.

"This instigates a feeling of protection in parents' minds about their children travelling on roads," they said.

The project is among the three winning projects of the second edition of Ericsson Innovation Awards India.

The 'smart helmet team' will be supported by Ericsson India financially to the extent of Rs 13 lakh towards incubation.

April 23

Navodaya Times ND 23/04/2016

P-7

आईआईटी आईए और नई प्रतिभाओं की सोच जानिए

नई दिल्ली, 22 अप्रैल (ब्यूरो): आईआईटी दिल्ली द्वारा शनिवार को अपने प्रिसर में ओपन हाउस के 12वें संस्करण का आयोजन किया जाएगा। आईआईटी में आयोजित इस 12वें ओपन हाउस में छात्रों द्वारा प्रस्तुत की जानेवाली परियोजनाओं की प्रदर्शनी भी होगी। प्रदर्शनी सुबह 10 बजे से दो बजे तक जनता के लिए निःशुल्क खुली रहेगी जबकि प्रयोगशालाएं शाम चार बजे तक खुली रहेंगी।

आईआईटी द्वारा आयोजित इस ओपन हाउस में चार हजार से अधिक स्कूली छात्र हिस्सा ले सकते हैं। इसके साथ ही 500 से अधिक शोध परियोजनाएं और 80 डेमो परियोजनाएं पेश की जाएंगी। हिप प्रोटेक्टिव

ओपन हाउस आज

- सुबह दस से दो बजे तक लगेगी प्रदर्शनी
- लगभग 20 नवीन परियोजनाओं का किया जाएगा प्रदर्शन

डिवाइस, लिक्वीफाइडपेट्रोलियमगैस सिलेंडर कैप रिमूवर, एनवायरमेंट फ्रेंडली बायो फर्टिलाइजर, डॉयग्राम बुक्स फॉर ब्लाइंड स्टूडेंट सहित करीब 20 नवीन परियोजनाओं को इस ओपन हाउस में दिखाया जाएगा।

संस्थान के निदेशक वी. रामगोपाल राव का कहना है कि आईआईटी ओपन हाउस में उच्च सामाजिक प्रभाव वाले

उत्पादों या प्रौद्योगिकी वाली परियोजनाओं की पहचान की जाएगी। हम समाज से और भी बेहतर तरीके से जुड़ने की कोशिश करेंगे और हमें इसके लिए सामाजिक प्रासंगिकता और प्रौद्योगिकियों पर काम करने की आवश्यकता है। हम कृषि और स्वास्थ्य संस्थानों के साथ जुड़ने जा रहे हैं और सामाजिक लाभ की पेशकश करनेवाले बहु अनुशासनिक परियोजनाओं पर काम करना चाहेंगे। ओपन हाउस में वह प्रोजेक्ट देखने को मिलेंगे, जिनसे समाज को सीधे फायदा होगा। इस ओपन हाउस में श्रीडी विजन और होलोग्राम पर एक विशेष सत्र भी चलेगा। यहां लोग आईआईटी के विशेषज्ञों की टेक्नोलॉजी वर्कशाप भी ज्वाइन कर सकते हैं।

IIT 'open house' to showcase 500 projects

SHIKHA SHARMA
NEW DELHI, APRIL 22

FROM A device to protect the elderly from accidents to a project on smart campuses, a session on 3D printing and holograms to a detailed drainage master plan for the capital, the 12th edition of 'Open House' at IIT-Delhi will see students display more than 500 projects this year.

The projects will be open for public viewing Saturday at the IIT campus from 10 am. Over 80 demo projects and 500 research projects will be on display at the Open House, while 4,000 school students are expected to visit the event.

Professor Josemon Jacob from IIT Delhi said, "Like every year, IIT-Delhi is also set to open its gates to science and technology enthusiasts and showcase the best of research and innovation that was undertaken in the last one year. The idea is to inspire and motivate everyone, especially the young, to get to know more about science."

One of the main projects this year is the 'Preparation of Master Plan of Drainage for NCT of Delhi'. The project – to formulate a master drainage plan for the city by 2021 – was given to IIT by the Delhi government.

The team, lead by A K Gosain, studied the existing natural drainage system, urban storm and waste water systems and evaluated their water-carrying capacities. According to the team, the first draft of the plan was submitted in February and the project is expected to be completed by the end of this year. The 'Open House' is free for public. While demonstrations will close by 2 pm, the laboratory will be open for visitors till 4 pm.

IISc slips in global research rankings, JNCASR gains

<http://www.deccanherald.com/content/542192/iisc-slips-global-research-rankings.html#>

Two city-based institutions have featured once again among the top 500 world institutions in terms of science research output.

The rankings were published by the Nature Publishing Group that brings out a number of well known academic journals. It also says that in terms of the overall science output, India ranked 13, while the United States topped the list.

In the rankings released on Thursday, ranking of Jawaharlal Nehru Centre for Advanced Scientific Research (JNCASR) has significantly gone up while that of the Indian Institute of Science (IISc) has marginally slipped, from 123 in 2015 to 137. The IISc, however, is still in much higher position in the rankings than JNCASR, which climbed up 45 ranks to reach 397.

Five other Indian institutions have been featured in the rankings namely, the Indian Institutes of Technology (rank 51), Council of Scientific and Industrial Research (80), Indian Institute of Science Education and Research (159), Tata Institute of Fundamental Research (rank 268), Indian Association for the Cultivation of Science (295) and the University of Hyderabad (472). A senior faculty from JNCASR, who didn't wish to be named, said: "We are obviously very happy that our ranking has improved. Our publication record is excellent. Considering the number of faculty and students that the institution comprises, I would say that we have been highly productive."

A senior faculty from the IISc said a few factors like the absence of nobel laureates among the faculty at IISc, besides others, went against achieving a higher position in such rankings. However, there was no reason to worry, he said. Prof Anurag Kumar, Director, IISc and V Nagaraja, president, JNCASR, could not be reached for a comment.